ISSN No. 2394-5990

अलख आजादी की नाटक में चित्रित समस्याएँ

श्री. मारुती यमुलवाड,
बलभीम महाविद्यालय, बीड. मो.८७९३६९७७०८

प्रस्तावना :

'अलख आजादी की' नाटक के माध्यम से सुशील कुमार सिंह जी ने सामाजिक जीवन के विविध प्रश्नों, समस्याओं, पहलुओं को प्रस्तुत कर समाज की यथार्थ परिस्थितियों का विश्लेषण किया है। साथ ही वर्तमान जीवन में व्याप्त व्यवस्थाजन्य विषमता, शोषण, हिंसा, अन्याय, अत्याचार को वाणी प्रदान की। 'अलख आजादी की' नाटक में अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। सुशील कुमार सिंह जी ने इन समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए सुधारवादी प्रयास किया है। 'लवकुमार लवलीन' उनके संदर्भ में लिखते हैं, एक सक्रिय नाटककार के रूप में उन्होंने अपनी नाट्य रचनाओं द्वारा समसामायिक विडंबनाओं, समस्याओं एवं मानवीय पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान की है और समकालीन यथार्थ से साक्षात्कार भी कराया है।''[१]

मानवीय संवेदनहीनता :

'आलख आजादी की' नाटक में सुशील कुमार सिंह ने स्वातंत्र्यपूर्व विभिन्न घटनाओं, प्रसंगों द्वारा मानवीय संवेदनहीनता को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। सन् १६०० ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई थी। इस कंपनी में लूटमार, धोखाधडी, बेईमान और जरूरत पड़ने पर कत्लेआम करनेवाले लोगों को शामिल किया गया था। शराफत, नैतिकता, भाई-चारा जैसे शब्द उनके लिए फालतू थे। पात्र खुशी से कहते हैं,

बच्चा-बच्चा दास बनेगा,
दासी नारी होगी
लूट-मार का खेल करेंगे,
मौज हमारी होगी
भोगेंगे हम उसकी दौलत,

वह दिन दूर नहीं
दौलत का बँटवारा होगा
वह दिन दूर नहीं
हिंदुस्तान हामारा होगा।[२]

अंग्रेजों ने भारत में रॉल्ट एक्ट लागू कर दिया था। इसके विरोध में लोगों ने म.गांधी के बताए रास्ते पर चलने का फैसला कर विशाल सभा का आयोजन किया था। अंग्रेजों ने सभा में गोलियां चलाई। लाश के ढेर लग गए। अपनी जान बचाने के लिए कई लोग कुएं में कूद गए। अंग्रेजो के विरोध में आवाज उठानेवालों को अमानवीयता से कुचला गया। गायक कहता है,

मानवता गुम-सुम हुई,
इतिहास है सन्न...
निहत्थों की भीड़ और
गोली दन-दन-दन[३]

सामाजिक शोषण :-

प्रस्तुत नाटक में समाज में हो रहे विभिन्न शोषण की स्थितियों को दर्शाया है। इस नाटक में स्वतंत्रतापूर्व काल में भारत आए पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अरब व्यापारियों के माल से लदे जहाज अंग्रेज लूटते थे। अंग्रेज बाजार की कीमतें तय करते थे और व्यापारियों को महेंगा माल बेचने के लिए मजबूर करते थे। उनका आदेश न मानने पर सब लोगों के सामने कोड़ों से पीटते थे। उन्हें कोठी में बंद कर भूखा रखते थे। ३० अक्तूबर १९२८ ई. को साइमन कमिशन के विरोध में जुलूस निकाला गया। निहत्थे, अहिंसावादी जुलूस पर अंग्रेजों ने लाठियों बरसाई। जिसमे लाला लजपतराय को चोट पहुंची ऐसे अनेक घटनाओं द्वारा सुशील कुमार सिंह ने अंग्रेज साम्राज्य की शोषणकारी नीति को 'अलख आजादी की' नाटक द्वारा चित्रित किया है।

जाति-भेद :-

प्राचीन काल से जाति-भेद की समस्या ने समाज को ग्रस्त कर लिया है। अंग्रेजों ने भी जाति-भेद के आधार पर भारत का विभाजन कर दिया। अंग्रेजों की

इस नीति से सभी परिचित थे। 'अलख आजादी की' नाटक में जातिभेद के संदर्भ में गायक मंडली गीत गाती हैं,

जाति-पाँत और छुआछूत में
हम जकड़ें हैं सदियों से
ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य-शूद्र के
लफड़ों में है सदियों से।[४]

मैकडानल्ड साहब ने मुसलमानों की तरह अछूतों और सिखों के लिए अलग निर्वाचन मंडल बनाने का निर्णय लिया। विभिन्न संप्रदाय, वर्ग और धर्म के लोग आपस में लड़ रहे थे। 'अलख आजादी की' नाटक में ग्रामीण लोग आपस में वार्तालाप कर रहे हैं तब एक ग्रामीण कहता है. अंग्रेज चाहते हैं भारत के अन्य संप्रदाय, वर्ग और धर्म के लोग भी इसी तरह की माँग करें ताकि झगडे हों, फसाद हो। देश के टुकडे-टुकडे हो जाएँ और वे अपना उल्लू सीधा कर सके।[५]

भूखमरी की समस्या :

स्वतंत्रतापूर्व अंग्रेज काल में जनता भूख और गरीबी से अत्यंत त्रस्त थी। भूखमरी की यह समस्या पूर्व काल से चली आ रही है। 'अलख आजादी की' नाटक में देशभक्त युवक वार्तालाप करते हुए कहते हैं, कोई भी क्रांति तभी सफल होती है, जब उसके पीछे जनता भी जाग्रत हो। जनता को जगाने के लिए समय और धैर्य चाहिए। फिर हमारे यहाँ अशिक्षा, भूख और गरीबी भी तो कितनी है।[६] भूखी, गरीब जनता क्रांति में अपना सहयोग नहीं दे सकती। उसका चरम लक्ष्य केवल भोजन प्राप्त करना ही रह जाता है। ऐसी स्थिति में देश, समाज प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।

भ्रष्ट न्यायव्यवस्था :

भारत देश अनेक वर्षों तक गुलामी का दर्द सहता रहा। क्रांतिकारियों, सत्याग्रहियों, देशप्रेमियों के अथक परिश्रम, बलिदान से देश आजाद हुआ। देश को सुचारू, सुशासित रूप से चलाने के लिए देश की न्याय व्यवस्था अनुशासन, सत्य, निष्पक्षता के आधार पर होनी आवश्यक है। 'अलख आजादी की' नाटक में नेता कहता है, ये गोरे... ये फिरंगी... ये अंग्रेज, अब जिसे चाहेंगे जेल भेज

देंगे। हमें न्याय की गुहार करने का मौका भी नहीं मिलेगा। हम ऐसे काले कानून का विरोध करते हैं।[७] लोग कानून का विरोध कर रहे थे। किंतु अंग्रेजों ने उनकी आवाज को अमानवीयता से दबा दिया। अंग्रेज जनता पर अन्याय, अत्याचार करते रहे।

राजनीतिक समस्याएँ :

सुशील कुमार सिंह ने राजनीतिक षड्यंत्र, सत्ता का दबाव, सक्षम नेतृत्व का आभाव, देश विभाजन आदि राजनीतिक समस्याओं का चित्रण 'अलख आजादी की' नाटक में किया है।

सक्षम नेतृत्व का आभाव :

'अलख आजादी की' नाटक में नील की खेती करनेवाले अंग्रेज जमीदारों के अत्याचार, शोषण से परेशान..होकर बंगाल के किसानों ने विद्रोह किया तो उन्हें अमानवीय यातनाएँ देकर उनके विद्रोह को कुचला गया। भारतीय जनता जागृत होती, जनता में चेतना, धैर्य, साहस होता तो छः सौ किलोमीटर दूर समुद्र पार से आए मुट्ठीभर अंग्रेज भारत पर शासन नहीं कर पाते। लार्ड क्लाइव केवल दो सौ अंग्रेज और पाँच सौ हिंदुस्तानी सिपाहियों के साथ मुर्शिदाबाद आया था। उसने इंग्लंड पार्लमेंट में बयान दिया था कि नगर के कई लाख लोग तमाशा देख रहे थे। अगर वो एकजुट होकर लकडी, पत्थरों से भी मारते तो युरोपीयन वहीं खत्म हो जाते। भारतीयों की इसी सहनशीलता का फायदा अंग्रेजी ने उठाया।

अवध के नवाब वाजिद अलीशाह हो या फिर दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह को गिरफ्तार कर ले जाते समय लाखों लोग आँसू बहाते खड़े थे। किंतु उन्होंने थोड़ा धैर्य, साहस दिखाया होता तो परिस्थिति कुछ और होती युवक दो कहता है, यदि वो एकजुट होकर अंग्रेजों पर टूट पड़ते तो हिंदुस्तान का इतिहास, कुछ और ही होता।[८] परिस्थितिनुसार, कालानुसार सशक्त निर्णय लेने की क्षमता मनुष्य में अत्यंत अनिवार्य है। राजनीति में ऐसे कार्यक्षम नेता की अत्यंत जरूरी है। निर्णयक्षमता के अभाव में समाज में हो रहे अन्याय, अत्याचार का चित्रण 'अलख आजादी की' नाटक में किया है।

षड्यंत्र :-

प्राचीन काल से ही मनुष्य, परिवार, समाज और देश षड्यंत्र का शिकार होता आया है। 'अलख आजादी की' नाटक में भारत में व्यापारी बनकर आए हुए युरोपियन्स हमारे देश पर राज्य करने के षड्यंत्र में जुट गए। इस नाटक में लेखिका कहती है, केवल बारह साल पहले इन परदेशियों पर एहसान करने का यह फल मिला उदार हिंदू राजा जमोरिन को... योरोप से आए डच लोगों ने भी यही किया और अंग्रेजों ने भी।....पहले व्यापार की अनुमति फिर कोठी... कोठी से किला.. फौजें और... कब्जा।... फ्रांसीसियों का उद्देश्य भी यहीं रहा... लेकिन अंग्रेज सबके उस्ताद निकले।[९] विदेशियों द्वारा रच हुए षड्यंत्र का साथ अपने ही लोगों ने दिया। भारत में गद्दारों की कमी नहीं इस नाटक में गायक-गायिका गाते हुए कहते हैं,

गद्दारों ने लिखा अजी इतिहास एक नया,
चाँदी के चंद टुकड़ों पे ये मुल्क बिक गया।
जयचंद, मीरजाफरों से देश है भरा,
आस्तीन के इन साँपों को पहचान लो जरा।[१०]

अज्ञानता, स्वार्थपरता, एकता का अभाव, लालच आदि के कारण विदेशियों ने भारत पर अनेक वर्ष अपनी सत्ता प्रस्थापित की। विदेशियों के साजिशों, षड्यंत्रों को जनता पहचान न सकी। इस नाटक में गायक गायिका गीत गाते हुए कहते हैं,

गोरों की साजिशें हैं अब गद्दारों का करम,
फिर मुल्क का क्या होगा, अब काहे का है भरम?
व्यापार करने आए थे वो राज पा गए,
हिंदोस्तां का तख्त और ताज पा गए। [११]

विदेशियों ने अपने षड्यंत्र को अंजाम देने हेतु, शराफत, नैतिकता, मानवता आदि सभी मूल्यों को अपने पैरोतले रौंद दिया।

सत्ता का दबाव :

'अलख आजादी की' नाटक में स्वतंत्रतापूर्व काल में जहाँगीर ने अंग्रेजों को

व्यापार करने, कोठियों बनाने की अपनी बस्तियों में अपने कानून के मुताबिक अपने मुलाजिमों को दंड देने की अनुमति दी थी। फलस्वरुप अंग्रेजों ने किसानों से लगान और मालगुजारी वसूल कर उन पर अत्याचार किए। जालियानवाला बाग हत्याकांड, असहयोग आंदोलन, भगतसिंह की फाँसी, कारतूस से बेचैन सिपाहियों का विद्रोह, सत्याग्रह आदि अनेक स्वतंत्रता पूर्व घटनाओं से भारत गुलामी की त्रासदी भोग रहा था। अंग्रेज अपनी सत्ता और पद का दबाव जनता पर डाल रहे थे। जनता उनके अन्याय, अत्याचार सहती रही। इस नाटक में गायक मंडली गाते हुए कहती है,

एक गुलामी गोरों की
एक गुलामी अपनों कीख
एक गुलामी घर-बाहर की
एक गुलामी अपनों की
ये है हिंदुस्तान
अपना देश महान। [१२]

योजना बध्द रुप से अंग्रेजों ने पूर्ण देश को अपने हाथ में ले लिया। अपनी सता, शक्ति और बुद्धि का उपयोग कर अंग्रेजों ने भारत पर अनेक वर्ष राज्य किया।

देश विभाजन :-

'अलख आजादी की' नाटक के संदर्भ में समाचार पत्रों की प्रतिक्रियाओं में हिंदुस्तान, कानपुर पत्रिका में लिखा है, सोने की चिडिया है भारत, किस्सा ये मशहूर था।..... 'अलख आजादी की' नाटक काफी प्रभावशाली रहा। देश के गुलाम होने की पृष्ठभूमि से आजादी मिलने तक की कहानी को मंच पर कर दिखाया गया।....नाटक में इस बात का भी एहसास कराया गया कि हम पुनः गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं। अंतर इतना है कि पहले भौगोलिक सीमाओं को लेकर परतंत्रता थी और अब आर्थिक।[१३] सुशील कुमार सिंह जी ने देश के चार सौ सालों का इतिहास व्यक्त करते हुए अनेक बलिदानों और संघर्शो से देश को स्वाधीनता प्राप्त होने का चित्रण किया है।

'अलख आजादी की' नाटक में मुस्लिम लीग के मोहम्मद अली जिन्ना दो कौम–दो राष्ट्र के अपने सिद्धांत पर अड़े हुए थे। इस बात से गांधीजी को बहुत दुःख पहुँचा। गांधीजी कहते हैं दो कौमों का सिद्धांत असत्य है।...हिंदोस्तान के मुसलमान विभाजन पर जोर दें तो मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते उन्हें रोक नहीं सकता...लेकिन यह एक कौम के रूप में साथ रहने के लिए अनगिनत हिंदुओं और मुसलमानों ने सदियों तक जो काम किये हैं... उसे धूल में मिलाना है।... मेरी आत्मा इस कल्पना के विरुद्ध बगावत करती है कि हिंदुत्व और इस्लाम दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों और सिद्धांतो के प्रतिनिधि हैं।[१४] गांधीजी देश के विभाजन से अत्यंत दुखी हुए। मार्च १९४२ तक जापानी फ़ौजें बर्मा को रौंद कर भारत की सीमाएँ लाँघने लगीं। २३ मार्च को ब्रिटिश मंत्रिमंडल के सदस्य स्टैंफर्ड क्रिप्स भारत आ गए थे। भारतीयों से ब्रिटिश सरकार ने वादा किया था कि, युद्ध के पश्चात् भारत आजाद होगा उसे अपना संविधान बनाने का अधिकार प्राप्त होगा किंतु प्रांतों और देशी राज्यों को नयी सरकार में शामिल होने या न होने की छूट होगी। यह वादा सुनकर गांधीजी ने स्टैफर्ड क्रिप्स के प्रस्ताव को ठुकराकर वापस अपने देश जाने की सलाह दी। क्योंकि इस प्रस्ताव से भारत के दो नहीं अनेक टुकड़े हो सकते थे। अगस्त सन् १९४२ ई. में भारत छोडो आंदोलन की शुरुआत हुई। गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी ने जेल में जाते–जाते जनता को 'करो या मरो' का संदेश दे दिया। महायुद्ध में अंग्रेजों की हालत दयनीय थी। मित्र राष्ट्र युद्ध जीत गए थे। ब्रिटेन कमजोर हो गया था। भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विजय के साथ अपनी स्वतंत्रता का युद्ध समाप्त नहीं किया। १८ फरवरी सन् १९४६ ई. को नौसेना ने विद्रोह किया। चारों ओर के दबाव से मजबूर होकर वाइसराय ने जवाहरलाल नेहरू को अंतरिम सरकार बनाने के लिए निमंत्रित किया। नेहरू ने जिन्ना और लीग के प्रतिनिधियों को सरकार में शामिल होने का प्रस्ताव दिया किंतु उस प्रस्ताव को जिन्ना ने ठुकरा दिया। जिन्ना द्वारा १६ अगस्त सन् १९४६ ई. सीधी कार्यवाही दिवस के रूप में मनाने की घोषणा से सभी जगह दंगे भड़क उठे। २२ मार्च सन् १९४७ ई. को लार्ड माउंट बेटन सता हस्तांतरण के लिए भारत आए। अगस्त सन् १९४७ ई. को देश आजाद हुआ किंतु विभाजन

की त्रासदी लेकर ही। प्रस्तुत नाटक में लेखिका कहती है, १५ अगस्त सन् १९४७ देश आजाद हुआ किंतु इसके दो टुकड़े हो चुके थे..भारत और पाकिस्तान...। दोनों ही हिस्से लहू-लुहान और खून से लथपथ थे।.... हजारों की तादाद में शरणार्थी पाकिस्तान से हिंदुस्तान और हिंदुस्तान से पाकिस्तान जा रहे थे...।[१५] देश विभाजन देश के इतिहास की बहुत भयानक और दुःखद घटना है। धर्म का विकृत रूप जागृत हो चुका था। सब अपने धर्म को श्रेष्ठ साबित करने में मानवता को पैरोंतले रौंद रहे थे, दंगा, हत्या, लूट हो रही थी। इस नाटक में गायिका कहती हैं,

काले पन्ने फिर जुड न सकें,
इतिहास हमेशा रखना याद्।
क्यों पाँव पड़ी थी बेडियाँ?
यह बात हमेशा रखना याद। [१६]

भारत के सुवर्ण पन्नों पर यह विभाजन का कलंक लग चुका था।

'अलख आजादी की' नाटक में सुशील कुमार सिंह जी ने अंग्रेज शासन काल की मानवीय संवेदनहीनता, जाति-भेद की समस्या, अंग्रेज साम्राज्य की शोषणकारी नीति, भूखमरी की समस्या, व्यसनाधीनता, अंग्रेजों के काल में हो रही भ्रष्ट न्याय व्यवस्था, विदेशियों की कूटनीति, अन्याय, अत्याचार और अपराधवृत्ति को सुशील कुमार सिंह ने नाटक में चित्रित किया है। साथ ही राजनीतिक षड्यंत्र, सत्ता का दबाव, सक्षम नेतृत्व का आभाव, देश विभाजन आदि राजनीतिक समस्याओं का चित्रण भी 'अलख आजादी की' नाटक में दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

१. लवकुमार लवलीन, साठोत्तर हिंदी नाटककार (दिल्ली, भावना प्रकाशन : प्रथम संस्करण सन् १९९८ ई.) पृष्ठ - ५६.
२. सुशील कुमार सिंह, अलख आजादी की (दिल्ली, वाणी प्रकाशन द्वितीय संस्करण सन् २००६ ई.) पृष्ठ ३४.
३. वहीं, पृष्ठ - ६५
४. वहीं, पृष्ठ - ५९

ISSN No. 2394-5990

५. वहीं, पृष्ठ – ७७
६. वहीं, पृष्ठ – ५३
७. वहीं, पृष्ठ – ६४
८. वहीं, पृष्ठ – ५३
९. वहीं, पृष्ठ – २७
१०. वहीं, पृष्ठ – ४३
११. वहीं, पृष्ठ – ४३
१२. वहीं, पृष्ठ – ५८–५९
१३. वहीं, पृष्ठ – ०९
१४. वहीं, पृष्ठ – ८०–८१
१५. वहीं, पृष्ठ – ८४
१६. वहीं, पृष्ठ – ८४

* * *